“सच्ची खोज अच्छी खबर”

ज्ञान सरोवर

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ष : 17 अंक : 03 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 30 जनवरी से 05 फरवरी, 2025 पृठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

पूर्वी भारत देश का विकास इंजन... मेक इन ओडिशा कान्क्लेव 2025 में बोले पीएम नरेंद्र मोदी

नई दिल्ली। पीएम नरेंद्र मोदी ने उत्कर्ष ओडिशा–मेक इन ओडिशा कॉन्क्लेव 2025 को संबोधित किया। नरेंद्र मोदी ने कहा कि मैं पूर्वी भारत को देश के विकास का ग्रोथ इंजन मानता हूं और ओडिशा की इसमें बड़ी भूमिका है। इतिहास साक्षी है, जब ग्लोबल ग्रोथ में भारत की बड़ी हिस्सेदारी थी, तब पूर्वी भारत का अहम योगदान था। उन्होंने कहा कि पूर्वी भारत में देश के बड़े इंडस्ट्रियल हब थे, बड़े पोर्ट्स थे, ट्रेड हब थे। ओडिशा साउथ ईस्ट एघ्शिया में होने वाले ट्रेड का प्रमुख सेंटर हुआ करता था। यहां के प्राचीन पोर्ट्स एक प्रकार से भारत के गेट–वे हुआ करते थे। मोदी ने कहा कि आज भारत विकास के ऐसे पथ पर चल रहा है, जिसको करोड़ों लोगों की आकांक्षाएं चला रही हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ही नहीं, बल्कि भारत की आकांक्षा हमारी ताकत है। उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है, ओडिशा बहुत जल्द विकास की उस ऊंचाई पर पहुंचेगा जहां पहुंचने की किसी ने कल्पना भी नहीं की है। मुझे खुशी है कि मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी जी की पूरी टीम ओडिशा के विकास को तेज गति देने में जुटी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि ओडिशा, असाधारण है। ओडिशा, नए भारत के आशावाद और मौलिकता का प्रतीक है। ओडिशा में आशावाद और मौलिकता भी हैं और यहां के लोगों ने हमेशा व्नजचमत. वितउ करने का जुनून दिखाया है। उन्होंने कहा कि आज भारत का विबने है–मक पद प्दकपं. आज भारत का मंत्र है– भ्मंस पद प्दकपं. इसके लिए ओडिशा का प्रकृति, यहां की प्राकृतिक सुंदरता बहुत मददगार है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के निर्माण में ओडिशा की बड़ी भूमिका है। ओडिशावासियों ने ‘समृद्ध ओडिशा’ के निर्माण का संकल्प लिया है। इस संकल्प की सिद्धि के लिए केंद्र सरकार की ओर से हर संभव सहयोग मिल रहा है। नरेन्द्र मोदी ने कहा कि मैं पूर्वी भारत को देश का विकास इंजन मानता हूं। आसियान देशों ने ओडिशा के साथ व्यापार संबंधों को मजबूत करने में रुचि दिखाई है। उन्होंने कहा कि भारत की वैश्विक व्यापार में बड़ी हिस्सेदारी में देश के पूर्वी हिस्से का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि करोड़ों लोगों की आकांक्षाएं भारत को विकास के पथ पर आगे बढ़ा रही हैं, एआई ‘‘भारत की आकांक्षा’’ है। ओडिशा नए भारत के आशावाद और मौलिकता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि कच्चे माल का निर्यात और तैयार उत्पादों का आयात स्वीकार नहीं किया जा सकता, यहां मूल्य संवर्धन होना चाहिए।

करियप्पा परेड मैदान में एनसीसी पीएम रैली को प्रधानमंत्री मोदी ने किया संबोधित, भारत के युवाओं को बताया फोर्स फॉर ग्लोबल गुड

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्रीय राजधानी के करियप्पा परेड मैदान में वार्षिक एनसीसी पीएम रैली को संबोधित किया। पीएम मोदी ने कहा कि आप सभी को एनसीसी दिवस के अवसर पर बहुत–बहुत शुभकामनाएं। आज यहां हमारे बीच 18 मित्र देशों के भी करीब 150 कैडेट्स भी मौजूद हैं, मैं इन सभी कैडेट्स का भी स्वागत करता हूं। गणतंत्र दिवस की परेड में सेलेक्ट होना अपने आप में ही उपलब्धि है। इस बार की परेड इसलिए भी खास थी क्योंकि हमारे गणतंत्र ने 75 साल पूरे किए हैं। 75 वर्षों के गणतंत्र में भारत के संविधान ने हर समय देश को लोकतांत्रिक प्रेरणा दी, नागरिक कर्तव्यों का महत्व समझाया। इसी तरह एनसीसी ने भी हर समय भारत के नौजवानों को राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा दी और उन्हें अनुशासन का महत्व समझाया। पीएम मोदी ने कहा कि आप 21वीं सदी में भारत के विकास को, दुनिया के विकास को निर्धारित करने वाले हैं। भारत के युवा सिर्फ भारत के लिए ही नहीं, बल्कि फोर्स फॉर ग्लोबल गुड्स हैं। आज दुनिया इस बात को मान रही है। कोई भी व्यक्ति हो, या देश... उसका सामर्थ्य तब बढ़ता है, जब वह अनावश्यक बाधाओं से पार पा लेता है। मुझे संतोष है कि भारत में युवाओं के सामने रहीं अनेक बाधाओं को बीते 10 वर्षों में हमने हटाने का काम किया है। इससे युवाओं का सामर्थ्य बढ़ा है, देश का सामर्थ्य बढ़ा है। इस अमृतकाल में हमें अपना एक ही लक्ष्य रखना है– विकसित भारत। हमारे हर निर्णय की कसौटी, हर हर कार्य की कसौटी विकसित भारत ही होनी चाहिए। इसके लिए हमें अपने पंच प्राणों को हमेशा याद रखना है।

पुणे में रहस्यमयी बीमारी का प्रकोप, 100 से ज्यादा संक्रमित, एक की मौत, कई वेंटिलेटर पर

मुंबई। पुणे में एक रहस्यमयी बीमारी का प्रकोप देखने को मिल रहा है। दुर्लभ न्यूरोलॉजिकल विकार गिलियन–बैरे सिंड्रोम (जीबीएस) के मामलों की संख्या 100 के पार पहुँच गई। सोलापुर में भी एक संदिग्ध की जीबीएस से मौत की खबर है। शुरुआती रिपोर्टों के अनुसार, पीड़ित पुणे में संक्रमित हुआ था और बाद में सोलापुर गया था।

स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, पुणे, पिंपरी चिंचवाड़ और आसपास के जिलों में जीबीएस के 18 और संदिग्ध मामले सामने आए हैं। विभिन्न अस्पतालों में इलाज करा रहे 101 मरीजों में से 16 वेंटिलेटर पर हैं। इनमें 68 पुरुष और 33 महिलाएं शामिल हैं। पुणे में फैल रही रहस्यमयी बीमारी से प्रभावित मरीजों का आयु वर्ग के अनुसार विवरण इस प्रकार है: 9 वर्ष से कम आयु के 19 बच्चे, 10 से 19 वर्ष के 15 किशोर, 20 से 29 वर्ष के 20 युवा, 30 से 39 वर्ष के 13 व्यक्ति, 40 से 49 वर्ष के 12 व्यक्ति, 50 से 59 वर्ष के 13 व्यक्ति, 60 से 69 वर्ष के 8 व्यक्ति और 70 से 80 वर्ष का 1 व्यक्ति इस बीमारी से पीड़ित है। वहीं, क्षेत्रवार विवरण के अनुसार, पुणे नगर निगम क्षेत्र से 81, पिंपरी चिंचवाड़ नगर निगम क्षेत्र से 14 और अन्य जिलों से 6 मामले सामने आए हैं। इससे स्पष्ट है कि इस बीमारी का प्रकोप पुणे शहर और उसके आसपास के क्षेत्रों में अधिक है, जिसमें सभी आयु वर्ग के लोग प्रभावित हुए हैं, लेकिन युवाओं और बच्चों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। मामले मुख्य रूप से सिंहगढ़ रोड, खड़कवासला, धायरी, किरकट–वाडी और आसपास के क्षेत्रों से सामने आए हैं।

संदूषण की आशंका के चलते पानी के नमूने जाँच के लिए भेजे गए हैं। शुरुआती जाँच में डेंगू, जीका और चिकनगुनिया के लिए रिपोर्ट नकारात्मक आई है, लेकिन 11 मल के नमूनों में से 9 नोरोवायरस और 3 कैम्पिलोबैक्टर जेजुनी जीवाणु संक्रमण के लिए सकारात्मक पाए गए हैं। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, 9 जनवरी को पुणे के एक अस्पताल में भर्ती एक मरीज में पहला जीबीएस मामला होने का संदेह है।

जाँच में कुछ नमूनों में कैम्पिलोबैक्टर जेजुनी बैक्टीरिया पाया गया है। खडकवासला बांध के पास एक कुएँ में ई कोली बैक्टीरिया का उच्च स्तर भी पाया गया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि कुएँ का उपयोग किया जा रहा था या नहीं। लोगों को पानी उबालकर पीने और खाना गर्म करके खाने की सलाह दी गई है। स्वास्थ्य विभाग 25,578 घरों का सर्वे कर रहा है ताकि ज़्यादा से ज़्यादा बीमार लोगों का पता लगाया जा सके और जीबीएस मामलों में वृद्धि के कारण का पता लगाया जा सके। जीबीएस एक गंभीर बीमारी है जिसमें शरीर का इम्यून सिस्टम गलती से नसों पर हमला करता है। इसका इलाज महंगा है, एक इंजेक्शन की कीमत 20,000 रुपये है।

देश के संप्रभु होने की याद दिलाता है गणतंत्र दिवस का पर्व, पहली बार लागू हुआ था संविधान

भारतीय लोकतंत्र के सबसे बड़े त्योहार गणतंत्र दिवस का जश्न पूरे देश में जोर–शोर से मनाया जा रहा है। हर साल 26 जनवरी के दिन इस पर्व को मनाया जाता है। इस मौके पर कर्तव्य पथ पर विभिन्न राज्यों और मंत्रालयों की झांकियां निकाली जाती हैं। जिसे देखने के लिए कई लोग काफी पहले ही टिकट की बुकिंग करा ली थी। तो वहीं करोड़ों लोगों ने टेलीविजन पर लाइव टेलीकास्ट के माध्यम से इस पूरे कार्यक्रम का आनंद उठाया है। क्या कभी आपने इस सवाल पर विचार किया है कि आखिर 26 जनवरी के दिन ही देश का गणतंत्र दिवस क्यों मनाया जाता है। अगर आप इस बारे में नहीं जानते हैं। ऐसे में यह खबर खास आपके लिए है। भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार बाबा साहेब डॉ. बीआर अंबेडकर ने कहा था, "संविधान महज एक वकील का दस्तावेज नहीं है, यह जीवन का वाहन है और इसकी आत्मा हमेशा युग की भावना है"। इस संविधान को अपनाने के उपलक्ष्य में देश 76वें गणतंत्र दिवस का जश्न मना रहा है, जिसका मुख्य आकर्षण वे झांकियां रहीं हैं जो भारत की समृद्ध परंपरा, सांस्कृतिक विरासत, देश की प्रगति और उपलब्धियों के आइने और भारतीय सेना, भारतीय नौसेना व एयर शो भी दिखाती हैं। गणतंत्र दिवस परेड का परेड समारोह पहले से ही सभी भारतीय राज्यों की राजधानियों में पूरे जोरों पर किया जा रहा है। गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 1950 संविधान को लागू करने की याद दिलाता है। जब भारत को 1947 में आजादी मिली थी तब 26 जनवरी, 1950 तक भारत का संविधान लागू नहीं हुआ था। संविधान सभा का पहला सत्र 9 दिसंबर, 1946 को और आखिरी सत्र 26 नवंबर, 1949 को हुआ और फिर एक साल बाद संविधान को अपनाया गया। डॉ. बीआर अंबेडकर ने संविधान की मसौदा समिति का नेतृत्व किया और इस दिन भारत संविधान दिवस भी मनाता है। गणतंत्र दिवस स्वतंत्र भारत की भावना का स्मरण कराता है क्योंकि इसी दिन 1930 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने औपनिवेशिक शासन से पूर्ण स्वराज की घोषणा की थी। गणतंत्र दिवस भारतीय नागरिकों की लोकतांत्रिक तरीके से अपनी सरकार चुनने की शक्ति का भी स्मरण कराता है, इसलिए देश इसे भारतीय संविधान की स्थापना के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय अवकाश के रूप में मनाता है। गणतंत्र दिवस समारोह देश में काफी उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन राष्ट्रपति राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। इसके अतिरिक्त भारत के राष्ट्रपति देश के योग्य नागरिकों को पद्म पुरस्कार वितरित करते हैं। साथ ही बहादुर सैनिकों को परमवीर चक्र, अशोक चक्र और वीर चक्र से सम्मानित किया जाता है। गणतंत्र दिवस परेड का लाइव प्रसारण और वेबकास्ट भी हर साल किया जाता है। ताकि लोग आसानी से परेड को देख सकें। गणतंत्र दिवस 2025 परेड की थीम 'स्वर्णिम भारतः विरासत एवं विकास' है, जो भारत के विकास पर जोर देती है। इस मौके पर इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांटो 76वें गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि रहे।

लोकतांत्रिक मूल्यों से संवरेगा गणतंत्र, स्वायत्त राष्ट्र की चेतना वाला भारत ही होगा सर्वश्रेष्ठ

उथल–पुथल भरे परिवेश में आज भारत जिस तरह विश्व पटल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा है, वह विश्व के लिए आश्चर्य और देशवासियों के लिए गौरव का विषय है। भारत सहस्रों वर्षों से मानव सभ्यता के अविरल प्रवाह का साक्षी रहा है। विपरीत परिस्थितियों में भी यहां अनेक शास्त्रों और विद्याओं की रचना हुई। इनकी उपस्थिति भारतीय मानस की तीक्ष्ण, सुदीर्घ और समृद्ध सत्ता का प्रमाण देती है। भारत का वर्णन अक्सर इसकी प्राकृतिक सुंदरता और इसके जीवंत भौतिक रूप के संदर्भ में किया जाता रहा है। वेद विभिन्न भाषाएं बोलने वाले लोगों के रूप में यहां के निवासियों का स्मरण करते हैं तो कालिदास हिमालय और समुद्र से जोड़ कर भारत का आकार रचते हैं। यही भारत आज 26 जनवरी को अपना गणतंत्र दिवस माना रहा है। 15 अगस्त, 1947 को देश ब्रिटिश राज से आजाद हुआ और 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ, ताकि भारतीय जन भारत के लिए भारत के मन से सरकार चलाएं। भारत में अंग्रेजों का आगमन व्यापार की आड़ में धोखे से शुरू हुआ था। फिर उन्होंने छल–कपट से शासन की बागडोर संभाल ली और धर्म, शिक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य एवं विकास ही नहीं, हमारे आत्म–बोध को भी नकारात्मक ढंग से प्रभावित किया। इसका असर यह हुआ कि हम अपनी संस्कृति के बारे में लज्जा, पिछड़ेपन या हीनता का अहसास करने लगे। स्वतंत्र भारत में भी ये हमारा पीछा नहीं छोड़ रहे हैं। परंपरागत रूप से भारत सारे विश्व को एक नीड़ की तरह देखता है। सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता के बावजूद देशवासियों में भारतीयता का भाव विभिन्न समुदायों के एक अनूठे समाहार के रूप में रहा है, जो हर किसी को अपनी खास पहचान बनाए रखने का भी अवसर देता है, जिसमें मनुष्य और प्रकृति सभी शामिल हैं। भारत के स्वदेशी सोच में जीवन में विश्वास, सामुदायिक जीवन, ज्ञान–विस्तार और आर्थिक क्रियाकलाप, सभी प्रकृति के इर्द–गिर्द स्थापित रहे हैं। जीवन रस को पुष्ट करने वाला प्रकृति केंद्रित विकास हमारे स्वभाव में था। प्रकृति के साथ रहना, न कि उस पर हावी होना भारतीय मनीषा की देन थी। इसमें पशु, पेड़ और धरती, सबका यथोचित सम्मान था। उपनिवेशीकरण में न केवल हमारी संपदा का दोहन हुआ, बल्कि स्वदेशी समाज, विचार और व्यवस्था का हाशियाकरण भी हुआ। लोग अपनी ही संस्कृति और स्वदेशी पहचान से घृणा करने लगे। यह प्रवृत्ति सृजनात्मकता और मौलिकता की जगह आत्मविस्मृति और फिर असंगत नए को अपनाने पर जोर देती रही। स्वतंत्र भारत में भी भारतीय विचारकों के योगदान को प्रायः नजरअंदाज किया गया और गांधी, टैगोर और श्री अरविंद जैसे महापुरुषों के दृष्टिकोण को लगभग नकार दिया गया। पश्चिमी दुनिया के अनुकूल एक नए भारत का निर्माण हमारा लक्ष्य बन गया, जिसमें वैज्ञानिक सोच और आधुनिकता प्रबल हो। कुछ सतही बदलावों के साथ अंग्रेजों की लीक पर चलना जारी रहा। विदेशी मानकों और प्रथाओं को आंख मूंद कर अपनाने को प्रमुखता मिली। पश्चिम जैसा दिखना और होना आधुनिक होने का पर्याय बन गया। आत्म की यह पराधीनता अज्ञानता के कारण हुई या जानबूझकर इतिहास और परंपरा से मुंह मोड़ने के कारण, यह आज भी ज्वलंत प्रश्न है। पिछले सात दशकों में भारतीय गणतंत्र ने कई पड़ाव पार किए हैं और कई परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुआ है। वैश्विक परिदृश्य को देखें तो यह बड़ी उपलब्धि कही जाएगी कि आम चुनाव समय पर हुए हैं तथा एक बार आपातकाल लगने के अलावा लोकतंत्र की व्यवस्थाएं अक्षुण्ण रही हैं। देश में राजनीतिक चेतना का भी विस्तार हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप समाज के अनेक वर्गों का प्रतिनिधित्व होने लगा है, किंतु स्वार्थ तथा क्षेत्रवाद के कारण जैसे–तैसे सत्ता में बने रहने की जुगत ढूंढ़ना ही प्रमुख कार्य हो गया है। वैचारिक प्रतिबद्धता के अभाव में राजनीतिक आचरण में अप्रत्याशित गिरावट दर्ज हो रही है। विगत वर्षों में जहां गरीबों की स्थिति सुधरी है, उद्योग को बढ़ावा मिला है, बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और कृषि में सुधार आदि की दिशा में कई जरूरी कदम उठाए गए हैं, वहीं शिक्षा, रोजगार, न्याय–व्यवस्था और स्वास्थ्य के क्षेत्र में निजीकरण की मार से संकट गहरा रहा है। बढ़ती जनसंख्या के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे का निर्माण और संसाधन उपलब्ध कराना दिनों–दिन मुश्किल हो रहा है। हम भारत के लोग एक जीवंत सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं। देश प्रगति पथ पर है, पर उसकी इस लय बरकरार रखने के लिए श्रम को आदर देनी वाली एक आदर्श और समयानुकूल संस्कृति विकसित करनी होगी। गणतंत्र के उत्तम स्वास्थ्य के लिए लोकतांत्रिक जीवन मूल्यों को सुदृढ़ करना होगा। स्वाधीनता संग्राम में बलिदान देने वाले नायक देश के कोने–कोने से आए थे। वे हर पंथ और जाति के थे और देश के प्रति उनका लगाव उन्हें बांधे हुए था। उनके सपनों का भारत एक समग्र रचना है। यह जरूरी है कि हम उनका भरोसा न तोड़ें। इसके लिए औपनिवेशिक काल में बनी छवि से आगे बढ़कर हमें अपने सामूहिक स्वरूप को पहचानने की जरूरत है। स्वायत्त राष्ट्र की चेतना वाला भारत ही सर्वश्रेष्ठ भारत होगा। गांधी जी ने चेतावनी दी थी कि भारत को पश्चिमी दुनिया की नकल नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने पर भारत का आत्मा खो जाएगा, जिसकी क्षति से वह बच नहीं पाएगा। इसी के साथ उनका यह भी कहना था कि जड़ों से जुड़े रहने का मतलब कैद होना नहीं है। आज का दिन उन्हीं जड़ों को खोजने और उनसे जुड़ने का सुअवसर लेकर आया है।

मुलुंड कांग्रेस द्वारा गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण कर संविधान की रक्षा की शपथ ली गयी

मुंबई। मुलुंड विधानसभा क्षेत्र में मुलुंड कांग्रेस साथियों द्वारा निम्न स्थानों पर क्रमशः मुलुंड ब्लॉक कार्यालय पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता डॉ बाबूलाल सिंह, शास्त्री नगर, मुलुंड कॉलोनी पर –उमेश वाणी, अमर नगर– राजन उठवाल, मुलुंड कॉलोनी कार्यालय– डॉ आर आर सिंह , संजय गांधी नगर– राजकुमार यादव, सीतनगर–मोहन लाल राज व वैशाली नगर–भगवान तिवारी ने ध्वजारोहण किया। और सभी नागरिकों को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर मुंबई कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष चरण सिंह सप्रा, महासचिव सुनील गंगवानी,डॉ. सचिन सिंह (महासचिव उ. भा. सेल, महाराष्ट्र कांग्रेस), कांग्रेस नेता नीता जोशी, संजय घरत, हरीशगुप्ता, अरविंद यादव, विठ्ठल सातपुते, राजन उटवाल, हेमकिरण जंगम, बीरेंद्रचतुर्वेदी, मोहित सिंह, सानू शेख, रिजवान शेख, शरीफ खान, तपन ऐगल, अलका सावला, कौशल्या गायकवाड, मैथ्यु चेरियन, उमेश टपाल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इस अवसर पर बोलते हुए चरण सिंह सप्रा ने कहा कि आज के दिन ही बाबा साहब अम्बेडकर द्वारा दिया गया संविधान लागु हुआ और सभी देशवासियो को समानता का अधिकार मिला, परन्तु वर्तमान सरकार संविधान को तोड़ने मरोड़ने में, नष्ट करने में लगी है स देश महंगाई बेरोजगारी से त्रस्त है, और यह

सरकार अपने धनी मित्रों पर धन लुटा रही है स हमें आज के दिन संविधान की रक्षा की शपथ लेनी है और वर्तमान सरकार को घर घर जाकर बेनक़ाब करना होगा।

दयानन्द वैदिक विद्यालय मुलुंड के पूर्व विद्यार्थियों का 16वाँ स्नेह मिलन समारोह संपन्न

मुंबई –हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दयानंद वैदिक विद्यालय मुलुंड के बैच 1997 द्वारा आयोजित पूर्व विद्यार्थियों का स्नेह मिलन कार्यक्रम का सफल आयोजन दयानंद बैंक्वेट हॉल, मुलुंड प. पर किया गया। इस कार्यक्रम में पूर्व सेवानिवृत्त शिक्षक,शिक्षिका,लिपिक एवं सिपाही के साथ–साथ लगभग 280 पूर्व छात्र–छात्राओं नें अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई । कार्यक्रम में मुंबई , अमृतसर,बैंगलुरु, वाराणसी, दिल्ली इत्यादि शहरों से भी पूर्व छात्र–छात्राएँ आए हुए थे। कार्यक्रम के आयोजन और सफलता में पिछले 2 महीने से अथक प्रयास करने वाले आयोजन समिति के सदस्य– तिलबहादुर सोनार, रंजीत गुप्ता, अविनाश पाठक, संजीव गुप्ता, दिलीप सिंह, योगेश यादव, सुभाष राज, विनोद राजपूत, अनिल जैसवाल, धर्मेश शर्मा, महेश गुप्ता, अनिता वर्मा,सरिता सिंघवी,पूनम ठाकुर का सभी उपस्थिति महानुभावों नें आभार

माना तथा भविष्य में इसी तरह के आयोजन हेतु शुभकामनाएँ दी। स्नेहा कैटरर्स के मालिक संजय माळी जी नें विशेष सहकार्य और मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में मंच संचालक की भूमिका समिति के सदस्य वरुण यादव द्वारा निभाई गई। जिन्होंने विद्यालय से जुड़ी हुई बहुत सी पुरानी यादों को साझा करके माहौल को भावुक और अविस्मरणीय बना दिया।

प्रयाग महाकुंभ में

52 हज़ार से अधिक जो बिजली के खंभे लगाए गये हैं उनमें कुछ ख़ास बात है।

अपनों को खोजना हो;
या कुछ खोया हुआ पाना हो।
रास्ता जानना हो;
या और कोई समस्या हो।
बस अपने नज़दीक में बिजली का खंभा खोज लीजिए।

हमारे ऊर्जा विभाग ने तीर्थयात्रियों की मदद के लिए एक बहुत ही अच्छा काम किया है।

1. बिजली के हर खंभे की जीआईएस मैपिंग करके उसकी भौगोलिक जगह चिन्हित की गई है।

2. हर खंभे को एक संख्या दी गई है। जो उस पर लिखी है। खंभे की संख्या बताने से उसकी लोकेशन यानी जगह मालूम पड़ जाएगी।

3. आपका कोई भी प्रिय व्यक्ति बिछड़ गया हो या अन्य कोई समस्या हो तो पुलिस या प्रशासन के नज़दीक के सहायता काउंटर अथवा हेल्पलाइन पर अपने खंभे की संख्या और अपनी समस्या बताने पर प्रशासन के अधिकारी या पुलिस आप तक पहुँचकर आपकी मदद कर पायेंगे।

4. एक अन्य विकल्प यह भी है कि बिजली के उसी खंभे पर उसी जगह पर क्यू आर (QR) कोड स्थापित है। इसे अपने स्मार्ट फ़ोन से आप स्कैन करेंगे तो एक छोटा सा फॉर्म स्वतः खुल जाएगा। उसमें अपना नाम, फ़ोन नंबर और समस्या आप भरकर सबमिट करेंगे तो प्रशासन आप तक स्वतः पहुँचकर आपकी मदद कर सकेगा।

हज़ारों लोगों ने इसका लाभ लिया है।

आवश्यकता पड़ने पर इस सुविधा का आप भी लाभ लें।

सम्पादकीय...

दिल्ली दंगों का दर्द फिर उभर

दिल्ली विधानसभा के लिए मतदान के लिए तैयार है, और पांच साल पहले भड़के उत्तर–पूर्वी दिल्ली के दंगों का दर्द फिर उभर आया है। दंगों की साजिश के आरोप में बहुत से लोग यूएपीए के तहत जेल में हैं, और उस मुकदमे का न्याय ठिठका हुआ है। वैसे पुलिस ने दंगे से जुड़े 758 मामले पंजीकृत किए थे। इनमें से एक स्पेशल सेल, 62 क्राइम ब्रांच और 695 उत्तर–पूर्वी दिल्ली के विभिन्न थानों में पंजीकृत हैं। मिली जानकारी के मुताबिक, पुलिस ने दंगों से जुड़ी कुल 758 एफआईआर दर्ज कीं। इनमें अभी तक 2619 लोगों की गिरफ्तारी हुई जिनमें से 2094 लोग जमानत पर हैं। अब तक सिर्फ 47 लोगों को दोषी पाया है, और 183 लोग बरी भी हो गए हैं। 75 लोगों के खिलाफ सबूत न होने के कारण कोर्ट ने उनका मामला रद्द कर दिया है। इतने वर्ष बीतने के बावजूद इनमें से अभी तक 268 मामलों में जांच पूरी नहीं हो पाई है। जरा सोचें 1680 दिन बाद दंगे के कौन से साक्ष्य अब मिलेंगे? कुछ अर्जियां ऐसी भी हैं, जिन पर मामले दर्ज ही नहीं किए गए क्योंकि उनमें कुछ बड़े नाम थे। ऐसे भी मामले (57) जिनमें पुलिस के हाथ प्रमाण नहीं लगे और इन्हें बंद करने के लिए पुलिस ने अदालत से निवेदन किया है। ऐसे 43 मामलों की क्लोजर रिपोर्ट कोर्ट ने स्वीकार कर ली हैं जबकि 14 रिपोर्ट अभी विचाराधीन हैं। सच है कि दिल्ली में कानून–व्यवस्था का जिम्मा केंद्र सरकार का है, लेकिन न्याय और जेल राज्य सरकार के हाथों हैं। यह भी सामने आ चुका है कि दिल्ली हिंसा के पहले दिन ही अनेक जागरूक लोग मनीष सिसोदिया सहित आप के बड़े नेताओं के घर गए थे कि श्हम सभी को तनावग्रस्त इलाके में चल कर लोगों को समझा कर शांत करना चाहिएच लेकिन इन नेताओं ने इससे इनकार कर दिया था। विदित हो दिल्ली में विधानसभा चुनाव के नतीजे के तत्काल बाद ही दंगे हो गए थे। इस आशय का पत्र और तथ्य अब चार्जशीट के हिस्से हैं। दंगों के तत्काल बाद दिल्ली सरकार के दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग ने नौ सदस्यीय कमेटी का गठन किया था। इसके चेयरमैन सुप्रीम कोर्ट के वकील एमआर शमशाद और गुरमिंदर सिंह मथारू, तहमीना अरोड़ा, तनवीर काजी, प्रो. हसीना हाशिया, अबु बकर सब्बाक, सलीम बेग, देविका प्रसाद तथा अदिति दत्ता सदस्य थे। इस जांच कमेटी ने दंगों में घोषित मुआवजे के लिए लिखे गए 700 प्रार्थनापत्रों का अध्ययन किया। अपने अध्ययन के बाद कमेटी ने पाया कि अधिकतर मामलों में क्षतिग्रस्त जगह का दौरा भी नहीं किया गया और जिन मामलों में जान–माल का नुकसान पाया गया, उनमें भी बहुत कम धनराशि, अंतरिम सहायता के रूप में दी गई। दंगों के तुरंत बाद कई लोग घर छोड़ कर चले गए। इसलिए बहुत से लोग मुआवजे के लिए आवेदन नहीं कर सके। मुआवजे में भी सरकारी अधिकारी के मरने पर उनके परिवार वालों को एक करोड़ की रकम दी गई जबकि एक आम नागरिक की मौत पर केवल 10 लाख रु पये का मुआवजा दिया गया। मुआवजे का कोई तार्किक आधार तय नहीं किया गया। इस रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली में कानून–व्यवस्था की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की है, फिर भी दंगा पीड़ितों को केंद्र ने कोई मदद नहीं की। इस बात के लिए दिल्ली की आम आदमी पार्टी सरकार की भूमिका भी संदिग्ध है कि अप्रैल, 2020 में उत्तर–पूर्वी दिल्ली दंगा दावा आयोग (एनईडीआरसीसी) के गठन के बावजूद आज भी 2,790 दावे अनसुलझे हैं। वादे–दावे आगे चल कर सरकार बनाम उपराज्यपाल के झगड़े में फंस गए। 25 अगस्त, 2022 को उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने दावों के निपटान में तेजी लाने के लिए आयोग में 40 नये हानि मूल्यांकनकर्ताओं को नियुक्त किया। उन्हें नुकसान का आकलन कर रिपोर्ट दिल्ली उच्च न्यायालय में पेश करने के लिए कहा गया। एलजी सक्सेना ने मौजूदा 14 मूल्यांकनकर्ताओं को 25 अगस्त की तारीख से तीन सप्ताह के भीतर उन्हें सौंपे गए दावा निपटान पर अपनी रिपोर्ट जमा करने का भी निर्देश दिया। कहा गया कि इन मूल्यांकनकर्ताओं में से कुछ को सरकार द्वारा उन्हें दी गई जिम्मेदारी के बारे में भी पता नहीं था। बहुत से लोगों ने काम ही नहीं शुरू किया। उधर आयोग के अधिकारी कहते हैं कि एलजी द्वारा नियुक्त असेस्मेंट टीम के 40 में से 5 से ही उनका संपर्क हो पाया। हालांकि यहां लोगों ने लाखों गंवाए हैं, समय के साथ उनके जख्म भर रहे हैं। बहुत से लोगों ने नये सिरे से रोजी–रोटी के रास्ते खोले हैं, लेकिन सरकार के मुआवजे के दावे और निर्दोष लोगों को न्यायिक सहयोग में आप सरकार की निर्ममता और लापरवाही केंद्र सरकार से कम नहीं हैं। न्याय की बात हो या राहत की या लोगों की नफरत मिटा कर सौहार्द के प्रयास की–तीनों कार्य राज्य की सरकार की जिम्मेदारी थे। वो मुकदमों के तेजी से निबटारे और दोषियों को सजा के लिए भी दबाव बना सकती थी, लेकिन आप सरकार इन सभी मुद्दों से मुंह मोड़े रही।

वोट खरीदने वाली राजनीति, लोक–लुभावन योजनाओं की भरमार

आज जब हम सक्षम–संपन्न भारत के निर्माण की आधारशिला रखने वाले संविधान के लागू होने की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, तब यह देखने को मिलना ठीक नहीं कि हमारे राजनीतिक दल चुनाव जीतने के लिए अनाप–शनाप लोक–लुभावनी घोषणाएं कर रहे हैं। ऐसी घोषणाएं इसके बाद भी की जा रही हैं कि इनसे नए भारत का निर्माण करने वाला वास्तविक विकास नहीं हो रहा। लोक–लुभावन घोषणाएं पहले भी की जाती थीं, लेकिन तब वे मुफ्त वस्तुएं या सुविधाएं देने तक सीमित रहती थीं। अब तो मुफ्त सुविधाओं के साथ धन देने की भी योजनाएं पेश की जा रही हैं। ऐसी योजनाओं में प्रमुख है महिलाओं को प्रति माह एक निश्चित राशि देना। चूंकि कुछ राज्यों में इस तरह की योजनाओं ने चुनावी जीत में बड़ी भूमिका निभाई, इसलिए दिल्ली में जहां भाजपा और कांग्रेस ने महिलाओं को 25–25 सौ रुपये प्रति माह देने की घोषणा की है, वहीं आम आदमी पार्टी ने 21 सौ रुपये। दिल्ली एक ऐसा राज्य है, जहां सरकार की आमदनी खर्च से अधिक है। इसी कारण सभी प्रमुख दलों में महिलाओं को प्रति माह धन देने की होड़ मची है। दिल्ली में कुछ और लोक–लुभावन घोषणाएं की गई हैं। जैसे भाजपा ने वरिष्ठ नागरिकों को मिलने वाली पेंशन 2000 से बढ़ाकर 2500 रुपये करने, गर्भवती महिलाओं को 21 हजार रुपये की आर्थिक मदद और छह पोषण किट के साथ हर गरीब परिवार की महिला को 500 रुपये में एलपीजी गैस सिलेंडर और होली–दीवाली पर एक–एक सिलेंडर मुफ्त देने का वादा किया है। इसके अलावा उसने जरूरतमंद छात्रों को केजी से लेकर पीजी तक मुफ्त शिक्षा देने की भी बात कही है। मुफ्त बिजली, पानी, इलाज, शिक्षा के साथ महिलाओं को निःशुल्क बस यात्रा, बुजुर्गों की तीर्थ यात्रा की योजना चला रही आप ने अब बुजुर्गों के इलाज का पूरा खर्च देने, मौलवियों के साथ पुजारियों–ग्रंथियों को भी हर महीने 18 हजार रुपये की सम्मान राशि प्रदान करने, छात्रों को बसों में मुफ्त और दिल्ली मेट्रो में छात्रों को 50 फीसद छूट देने का वादा भी किया है। कांग्रेस ने भी 200 यूनिट फ्री बिजली की योजना को बढ़ाकर 300 यूनिट करने के साथ महिलाओं के लिए प्यारी दीदी योजना, युवाओं के लिए युवा उड़ान योजना और महंगाई मुक्ति योजना लाने के साथ कई मुफ्त सुविधाएं देने का वादा किया है। कुल मिलाकर तीनों प्रमुख दलों के घोषणा पत्रों में लोक–लुभावन योजनाओं की भरमार है। यह सही है कि देश में एक तबका ऐसा है, जिसे अपने जीवनयापन के लिए सरकारी मदद की जरूरत पड़ती है। इसी कारण आजादी के बाद से ही विभिन्न मदों में सब्सिडी दी जा रही है।

कुछ मदों में सब्सिडी देना जरूरत भी है, जैसे किसानों को सस्ते दाम में बीज, खाद आदि मिलना चाहिए, क्योंकि विकसित देश भी ऐसा कर रहे हैं। किसानों को सब्सिडी देना इसलिए भी जरूरी है, ताकि खाद्यान्न महंगा न होने पाए। भारत की तरह विश्व के तमाम देश शिक्षा, स्वास्थ्य, सार्वजनिक परिवहन के क्षेत्र में सब्सिडी देते हैं। एक कल्याणकारी राज्य को ऐसा करना भी चाहिए। शिक्षित और स्वस्थ समाज देश की आर्थिक उन्नति में भागीदार बनता है। चूंकि भारत में बड़ी संख्या में गरीब हैं, इसलिए उन्हें रियायती दामों पर अन्न उपलब्ध कराया जाना चाहिए, लेकिन बात तब बिगड़ने लगती है, जब सिर्फ चुनावी जीत के इरादे से लोगों को लोक–लुभावनी योजनाओं से प्रलोभित किया जाए और इस क्रम में बैंक कर्ज माफ करने जैसे कदम उठाए जाएं। ऐसे कदम मुफ्तखोरी बढ़ाते हैं और लोगों को आत्मनिर्भर बनने से रोकते हैं। कई अध्ययन यह बताते हैं कि कृषि कर्ज माफी से न तो किसानों का भला होता है और न ही कृषि का, लेकिन राजनीतिक दल कृषि कर्ज माफ करने की घोषणा करते ही रहते हैं। मुफ्तखोरी वाली योजनाओं का खर्च कहीं न कहीं अर्थव्यवस्था पर बुरा असर डालता है, क्योंकि सरकारों को अपनी इन योजनाओं को पूरा करने के लिए अन्य वस्तुओं या सुविधाओं को महंगा करना पड़ता है। मुफ्त वाली योजनाओं की कीमत लोगों को ही चुकानी पड़ती है। एक समय प्रधानमंत्री मोदी ने रेवड़ी संस्कृति को लेकर देश को आगाह किया था, लेकिन उसका राजनीतिक दलों पर कोई असर नहीं पड़ा और अब यह देखने को मिल रहा है कि खुद भाजपा भी ऐसी घोषणाएं करने को बाध्य है। यह भी साफ देखने को मिल रहा है कि मुफ्त या रियायती सुविधाएं बढ़ाते जाने से बुनियादी सुविधाओं की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। क्या यह कहा जा सकता है कि सरकारी स्कूलों, अस्पतालों अथवा सार्वजनिक परिवहन की व्यवस्था लोगों की अपेक्षाओं पर खरी उतर पा रही है? यह ठीक है कि आम तौर पर पुरुषों पर निर्भर रहने वाली महिलाओं के पास धन जाने से उनका आत्मसम्मान बढ़ता है, लेकिन क्या यह उचित नहीं होगा कि उन्हें स्वावलंबी बनाने वाली योजनाएं लाई जाएं और जो ऐसी योजनाएं पहले से चल रही हैं, उन्हें और प्रभावी बनाया जाए? ऐसा करने से समाज के साथ देश की भी आर्थिक स्थिति सुधरेगी। राजनीतिक दल इससे अनजान नहीं हो सकते कि जो राज्य सीधे धन या मुफ्त सुविधाएं देने की योजनाएं लाते हैं, उनमें से कई को उन्हें पूरा करना कठिन होता है। कुछ तो उन्हें आधे–अधूरे ढंग से लागू करने या फिर उनमें विलंब करने के लिए विवश हो जाते हैं। इतना ही नहीं, वे आर्थिक संकट से भी घिर जाते हैं। दिल्ली आर्थिक रूप से सक्षम राज्य अवश्य है, लेकिन क्या यह किसी से छिपा है कि इसके बाद भी राजधानी कई बुनियादी समस्याओं से जूझ रही है? कई इलाकों में लोगों को साफ पीने का पानी भी नहीं मिल पा रहा है। आखिर अपेक्षाकृत संपन्न दिल्ली के लोगों को मुफ्त सुविधाएं देने की जरूरत क्यों पड़ रही है?

बेहतर होगा कि राजनीतिक दल अपनी लोक–लुभावन घोषणाओं पर फिर से विचार करें, क्योंकि हमारे संविधान निर्माताओं ने कभी नहीं सोचा होगा कि देश के नेता बुनियादी सुविधाओं की गुणवत्ता बढ़ाने के बजाय एक तरह से वोट खरीदने का काम करेंगे।

प्रगतिशील भारत के निर्माण में समर्पित होने का संकल्प लेने का दिन है गणतंत्र दिवस

गणतंत्र शब्द का साधारण अर्थ है ''लोगों का तंत्र'' यानी कि जिस संविधान द्वारा हमारे देश में कानून का राज स्थापित है, उस संविधान से ही हमारे देश के तंत्र को मजबूती मिलती है और उसी तंत्र को भारतवासी मानते हैं। इसलिए हमारे देश को गणतांत्रिक देश बोला जाता है। हमारे देश में हमेशा से लोगों के लिये संविधान का एक अहम स्थान है। गणतंत्र दिवस हर वर्ष जनवरी महीने की 26 तारीख को पूरे देश में देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत होकर मनाया जाता है। भारत के लोग हर साल 26 जनवरी का बेसब्री से इंतजार करते हैं, क्योंकि 26 जनवरी को ही 1950 में भारतीय संविधान को एक लोकतांत्रिक प्रणाली के साथ भारत देश में लागू किया गया था। कहा जाए तो 26 जनवरी को ही हमारे गणतंत्र का जन्म हुआ। और भारत देश एक गणतांत्रिक देश बना। हमारे देश को आजादी तो 15 अगस्त 1947 को ही मिल गयी थी, लेकिन 26 जनवरी 1950 को भारत एक स्वतंत्र गणराज्य बना और भारत देश में नए संविधान के जरिए कानून का राज स्थापित हुआ। यह दिन उन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को भी याद करने का दिन है, जिन्होंने अंग्रेजों से भारत को आजादी दिलाने के लिए वीरतापूर्ण संघर्ष किया। आज के दिन ही भारत ने विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की स्थापना के लिए उपनिवेशवाद पर विजय प्राप्त की। गणतंत्र दिवस हमारे संविधान में संस्थापित स्वतंत्रता, समानता, एकता, भाईचारा और सभी भारत के नागरिकों के लिए न्याय के सिद्धांतों को स्मरण और उनको मजबूत करने का एक उचित अवसर है। क्योंकि हमारा संविधान ही हमें अभिव्यक्ति की आजादी देता है। अगर देश के नागरिक संविधान में प्रतिष्ठापित बातों को अनुसरण करेंगे तो इससे देश में अधिक लोकतांत्रिक मूल्यों का उदय होगा। भारत का संविधान सबको समान अधिकार देता है, भारतीय संविधान किसी से भी जाति, धर्म, ऊंच–नीच और अमीरी–गरीबी के आधार पर कभी भी भेदभाव नहीं करता है। आज भारत एक गणतांत्रिक देश है, जिसमें शिक्षा और चिकित्सा सुविधाओं का महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए। आज भारत सरकार इस समय देश में बहुत सारी जनहितकारी योजनाएं चला रही है लेकिन शिक्षा, चिकित्सा और बेरोजगारी पर अभी बहुत काम होना बाकी है। आज भारत सरकार और सभी राज्य की सरकारों को देश को शिक्षा माफियाओं और चिकित्सा माफियाओं से मुक्ति के लिए अभियान चलाना चाहिए, जिससे कि देश में शिक्षा और चिकित्सा सुविधाओं का बाजारीकरण रुक सके और कमीशनखोरी का बोलबाला खत्म हो सके। आज के समय भारतीय गणराज्य में शिक्षा सुविधाओं और चिकित्सा सुविधाओं में कमीशनखोरी का बोलबाला है। आज भारत में अच्छी शिक्षा और अच्छी चिकित्सा सुविधाओं के लिए काफी खर्चा करना पड़ता है, जिससे कि गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों को अपने बच्चों की शिक्षा के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है और चिकित्सा सुविधाओं के लिए घर–बार तक बेचने के लिए मजबूर होना पड़ता है। आज प्राइवेट सेक्टर में शिक्षा प्राप्त करने के लिए बच्चों की ड्रेस से लेकर किताबों तक में बड़े स्तर का कमीशन होता है, अगर स्कूल या कॉलेज फीस की बात की जाए तो ये आसमान को छूए जा रही है जिस पर सरकार का भी कोई नियंत्रण नहीं है। इसके लिए भारत सरकार को एक नीति निर्धारित करनी चाहिए जिससे कि देश की शिक्षा व्यवस्था से भ्रष्टाचार खत्म हो सके। आज देश में चिकित्सा सुविधाओं में भी भ्रष्टाचार का बोलबाला है। अगर निजी अस्पतालों की बात की जाए तो वहाँ पर अगर गरीब और मध्यमवर्गीय का व्यक्ति पहुँच जाए तो उसे कुछ दिनों के लिए ही लाखों का बिल चुकाना पड़ता है। मरीज की जांचों से लेकर उसकी दवाइओं तक में 50 गुना से ज्यादा कमीशन वसूला जाता है। आज सरकार द्वारा इस पर भी नियंत्रण करने की जरूरत है, जिससे की गरीब लोगों को सस्ते में चिकित्सा सुविधाओं का फायदा मिल सके और देश में वास्तव में लोगों को संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों का फायदा मिल सके। आज भारत देश में भ्रष्टाचार की जड़ें निचले स्तर तक फैली हुई हैं। हर भारतवासी को हर छोटी से छोटी चीज में भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ता है। देश के अधिकतर सरकारी कार्यालयों में बिना रिश्वत के लोगों के कार्य नहीं किये जाते हैं जिससे लोगों को मजबूरी में अपने महत्वपूर्ण कार्य कराने के लिए रिश्वत की भेट चढ़ानी पड़ती है। आज सरकारी कार्यालयों में जो खरीद फरोख्त होती है उसमे भी बड़े स्तर की कमीशन खोरी होती है जिस पर नियंत्रण के सरकार को प्रयास किया जाना चाहिए। आज शासन–प्रशासन को सभी स्तरों पर कुशल, पारदर्शी, भ्रष्टाचारमुक्त, जवाबदेह और नागरिक अनुकूल बनाना होगा। आज भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों को एक मुहिम छेड़नी होगी जिससे कि लोगों में भ्रष्टाचार के प्रति जागरूकता आये और देश से भ्रष्टाचार का खात्मा हो सके। आज भारत बेशक विश्व गणतंत्र शब्द का साधारण अर्थ है ''लोगों का तंत्र'' यानी कि जिस संविधान द्वारा हमारे देश में कानून का राज स्थापित है, उस संविधान से ही हमारे देश के तंत्र को मजबूती मिलती है और उसी तंत्र को भारतवासी मानते हैं। इसलिए हमारे देश को गणतांत्रिक देश बोला जाता है। हमारे देश में हमेशा से लोगों के लिये संविधान का एक अहम स्थान है। गणतंत्र दिवस हर वर्ष जनवरी महीने की 26 तारीख को पूरे देश में देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत होकर मनाया जाता है। भारत के लोग हर साल 26 जनवरी का बेसब्री से इंतजार करते हैं, क्योंकि 26 जनवरी को ही 1950 में भारतीय संविधान को एक लोकतांत्रिक प्रणाली के साथ भारत देश में लागू किया गया था। कहा जाए तो 26 जनवरी को ही हमारे गणतंत्र का जन्म हुआ। और भारत देश एक गणतांत्रिक देश बना। हमारे देश को आजादी तो 15 अगस्त 1947 को ही मिल गयी थी, लेकिन 26 जनवरी 1950 को भारत एक स्वतंत्र गणराज्य बना और भारत देश में नए संविधान के जरिए कानून का राज स्थापित हुआ। यह दिन उन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को भी याद करने का दिन है, जिन्होंने अंग्रेजों से भारत को आजादी दिलाने के लिए वीरतापूर्ण संघर्ष किया। आज के दिन ही भारत ने विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की स्थापना के लिए उपनिवेशवाद पर विजय प्राप्त की। गणतंत्र दिवस हमारे संविधान में संस्थापित स्वतंत्रता, समानता, एकता, भाईचारा और सभी भारत के नागरिकों के लिए न्याय के सिद्धांतों को स्मरण और उनको मजबूत करने का एक उचित अवसर है। क्योंकि हमारा संविधान ही हमें अभिव्यक्ति की आजादी देता है। अगर देश के नागरिक संविधान में प्रतिष्ठापित बातों को अनुसरण करेंगे तो इससे देश में अधिक लोकतांत्रिक मूल्यों का उदय होगा। भारत का संविधान सबको समान अधिकार देता है, भारतीय संविधान किसी से भी जाति, धर्म, ऊंच–नीच और अमीरी–गरीबी के आधार पर कभी भी भेदभाव नहीं करता है। आज भारत एक गणतांत्रिक देश है, जिसमें शिक्षा और चिकित्सा सुविधाओं का महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए। आज भारत सरकार इस समय देश में बहुत सारी जनहितकारी योजनाएं चला रही है लेकिन शिक्षा, चिकित्सा और बेरोजगारी पर अभी बहुत काम होना बाकी है। आज भारत सरकार और सभी राज्य की सरकारों को देश को शिक्षा माफियाओं और चिकित्सा माफियाओं से मुक्ति के लिए अभियान चलाना चाहिए, जिससे कि देश में शिक्षा और चिकित्सा सुविधाओं का बाजारीकरण रुक सके और कमीशनखोरी का बोलबाला खत्म हो सके। आज के समय भारतीय गणराज्य में शिक्षा सुविधाओं और चिकित्सा सुविधाओं में कमीशनखोरी का बोलबाला है। आज भारत में अच्छी शिक्षा और अच्छी चिकित्सा सुविधाओं के लिए काफी खर्चा करना पड़ता है, जिससे कि गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों को अपने बच्चों की शिक्षा के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है और चिकित्सा सुविधाओं के लिए घर–बार तक बेचने के लिए मजबूर होना पड़ता है। आज प्राइवेट सेक्टर में शिक्षा प्राप्त करने के लिए बच्चों की ड्रेस से लेकर किताबों तक में बड़े स्तर का कमीशन होता है, अगर स्कूल या कॉलेज फीस की बात की जाए तो ये आसमान को छूए जा रही है जिस पर सरकार का भी कोई नियंत्रण नहीं है। इसके लिए भारत सरकार को एक नीति निर्धारित करनी चाहिए जिससे कि देश की शिक्षा व्यवस्था से भ्रष्टाचार खत्म हो सके। आज देश में चिकित्सा सुविधाओं में भी भ्रष्टाचार का बोलबाला है। अगर निजी अस्पतालों की बात की जाए तो वहाँ पर अगर गरीब और मध्यमवर्गीय का व्यक्ति पहुँच जाए तो उसे कुछ दिनों के लिए ही लाखों का बिल चुकाना पड़ता है। मरीज की जांचों से लेकर उसकी दवाइओं तक में 50 गुना से ज्यादा कमीशन वसूला जाता है। आज सरकार द्वारा इस पर भी नियंत्रण करने की जरूरत है, जिससे की गरीब लोगों को सस्ते में चिकित्सा सुविधाओं का फायदा मिल सके और देश में वास्तव में लोगों को संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों का फायदा मिल सके। आज भारत देश में भ्रष्टाचार की जड़ें निचले स्तर तक फैली हुई हैं। हर भारतवासी को हर छोटी से छोटी चीज में भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ता है। देश के अधिकतर सरकारी कार्यालयों में बिना रिश्वत के लोगों के कार्य नहीं किये जाते हैं जिससे लोगों को मजबूरी में अपने महत्वपूर्ण कार्य कराने के लिए रिश्वत की भेट चढ़ानी पड़ती है। आज सरकारी कार्यालयों में जो खरीद फरोख्त होती है उसमे भी बड़े स्तर की कमीशन खोरी होती है जिस पर नियंत्रण के सरकार को प्रयास किया जाना चाहिए। आज शासन–प्रशासन को सभी स्तरों पर कुशल, पारदर्शी, भ्रष्टाचारमुक्त, जवाबदेह और नागरिक अनुकूल बनाना होगा।

नये संकल्पों एवं नये प्रयोगों से समृद्ध होता गणतंत्र

गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है, इसी दिन 26 जनवरी, 1950 को हमारी संसद ने भारतीय संविधान को पास किया। इस दिन भारत एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य बना। इसने ब्रिटिश शासन के भारत सरकार अधिनियम 1935 को पूरी तरह खत्म कर दिया और अपना स्वतंत्र संविधान इसी दिन लागू किया। इस वर्ष 76वें गणतंत्र दिवस समारोह में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबिआंतो मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। यह उनके राष्ट्रपति पद संभालने के बाद भारत की पहली आधिकारिक यात्रा होगी, जो दोनों देशों के बीच संबंधों को और मजबूत करेगी। इस वर्ष की थीम 'स्वर्णिम भारत– विकास के साथ विरासत' है।

यह थीम देश की विरासत को संभालते हुए भारत की प्रगति की यात्रा को दर्शाती है। किसानों, शिक्षकों, न्यायविदों, मजदूरों, वैज्ञानिकों, उद्योगपतियों, व्यापारियों और इंजीनियरों की विविध भूमिकाओं की सामूहिक शक्ति हमारे देश को 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान' की भावना के अनुरूप आगे बढ़ने में सक्षम बना रही है। इस बार गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के साथ–साथ पूरे भारत से कई ऐसे लोगों को भी आमंत्रित किया जा रहा है जिन्होंने अपने गांव, समाज एवं राष्ट्रमें विकास के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य किया है, इस तरह इस बार गणतंत्र दिवस समारोह ऐसे अनेक नये प्रयोगों एवं प्रदर्शनों का साक्षी बन रहा है। भारतीय संविधान दुनिया का सबसे विशिष्ट संविधान माना जाता है। भारत की संविधान सभा ने दुनिया के सभी संविधानों का अध्ययन किया और हर संविधान के विशिष्ट प्रावधानों को अपने संविधान में शामिल किया। नागरिक स्वतंत्रता के जितने अधिकार भारतीय संविधान में हैं उतने दुनिया के किसी अन्य संविधान में नहीं। भारतीय संविधान की दूसरी विशेषता संविधान की विशालता एवं समग्रता है। भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता का प्रावधान तो है लेकिन इसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्मानुसार आचरण करने की पूरी स्वतंत्रता है। इसमें नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य की स्पष्ट विवेचना है। इसमें संघात्मकता भी है और एकात्मकता भी है। भारतीय संविधान में सत्ता चयन के लिये संसदीय प्रणाली को सुनिश्चित किया है तथा संचालन के लिये विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका जैसे तीन अंग सुनिश्चित किये। भारतीय संविधान में केंद्र और राज्य सरकार के बीच विषयों और कार्यों का स्पष्ट विभाजन है। केन्द्र सरकार को कुछ आपात अधिकार भी दिये गये हैं जिससे वह केन्द्र राज्य में हस्तक्षेप कर सकता है।

इतने अनूठे, विलक्षण एवं समग्र संविधान के बावजूद छिहत्तर वर्षों में हमारा गणतंत्र कितनी ही कंटीली झाड़ियों में फँसा रहा। लेकिन अब इन राष्ट्रीय पर्वों को मनाते हुए संप्रभुता का अहसास होने लगा है। गणतंत्र का जब हम जश्न मनाते हैं, तो उसमें कुछ कर गुजरने की तमन्ना भी जागती है तो अब तक कुछ न कर पाने की बेचैनी भी दिखती है। हमारी जागती आंखो से देखे गये स्वप्नों को आकार देने का विश्वास मुखर होता है तो जीवन मूल्यों को सुरक्षित करने एवं नया भारत निर्मित करने की तीव्र तैयारी सामने आती है। अब होने लगा है हमारी स्व–चेतना, राष्ट्रीयता एवं स्व–पहचान का अहसास। जिसमें आकार लेते वैयक्तिक, सामुदायिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक अर्थ की सुनहरी छटाएं हैं। राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस हमारी उन सफलताओं की ओर इशारा करता है जो इतनी लंबी अवधि के दौरान अब जी–तोड़ प्रयासों के फलस्वरूप मिलने लगी हैं। यह हमारी विफलताओं

पर भी रोशनी डालता है कि हम नाकाम रहे तो आखिर क्यों! क्यों हम राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को सुदृढ़ता नहीं दे पाये हैं? क्यों गणतंत्र के सूरज को राजनीतिक अपराधों, घोटालों और भ्रष्टाचार के बादलों ने घेरे रखा है? यह सही है और इसके लिए सर्वप्रथम जिस इच्छा–शक्ति की आवश्यकता है, वह हमारी शासन–व्यवस्था एवं शासन नायकों में सर्वात्मना नजर आनी चाहिए और ऐसा होने लगा है तो यह सुखद अहसास है। बावजूद अभी भी देश की राजनीति अनेक विसंगतियों एवं विडम्बनाओं से घिरी है। यह विडंबना है कि आजादी की हीरक जयंती मना चुके देश में मतदाता को हम इतना जागरूक नहीं बना पाए कि वो अपने विवेक से मतदान कर सके।

क्रांतिकारी दल के नेता थे सुभाष चंद्र बोस, देश को आजाद कराने में निभाई अहम भूमिका

भारत में नेताजी के नाम से फेमस सुभाष चंद्र बोस का आज ही के दिन यानी की 23 जनवरी को जन्म हुआ था। आज पूरा देश सुभाष चंद्र बोस की 128वीं जयंती मना रहा है। वह एक योद्धा, वीर सैनिक, महान सेनापति और कुशल राजनीतिज्ञ के तौर पर भी जाने जाते हैं। देश को अंग्रेजों से आजादी दिलाने में नेताजी का अहम योगदान है। इन्होंने देश को आजाद कराने के लिए आजाद हिंद फौज का गठन भी किया था। तो आइए जानते हैं नेताजी की बर्थ एनिवर्सरी के मौके पर सुभाष चंद्र बोस के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और शिक्षा

ओडिशा के कटक में 23 जनवरी 1897 को सुभाष चंद्र बोस का जन्म हुआ था। इन्होंने अपनी शुरूआती शिक्षा कटक के रेवेंशॉव कॉलेजिएट स्कूल से पूरी की। वहीं साल 1915 में सुभाष चंद्र बोस ने कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। फिर सिविल सर्विस की तैयारी करने के लिए उन्होंने इंग्लैंड के कैंब्रिज विश्वविद्यालय में एडमिशन लिया। साल 1920 में ने सुभाष चंद्र बोस इंडियन सिविल सर्विसेज की परीक्षा दी। जिसमें उनको चौथा स्थान हासिल हुआ। उस दौरान यह बड़ी उपलब्धि थी। भारत आकर उन्होंने अपना पद संभाला। लेकिन देश की दयनीय स्थिति को देखते हुए उन्होंने साल 1921 में नौकरी छोड़ दी और देश को आजाद कराने की मुहिम में जुट गए।

कांग्रेस से जुड़े नेताजी

इस दौरान नेताजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़ गए। उस दौरान नेता जी और महात्मा गांधी के विचारों में टकराव होता था। हांलाकि दोनों की मंशा भारत की आजादी थी। लेकिन जहां एक ओर महात्मा गांधी उदार दल के नेता थे, तो वहीं नेताजी क्रांतिकारी दल का नेतृत्व कर रहे थे। लेकिन महात्मा गांधी सुभाष चंद्र बोस को काफी ज्यादा मानते थे। गांधी जी ने उन्हें देशभक्तों के देशभक्त की उपाधि से नवाजा था। वहीं जर्मन के तानाशाह अडोल्फ हिटलर ने उनको पहली बार नेताजी कहकर बुलाया था।

आजाद हिंद फौज का गठन

आपको बता दें कि दूसरे विश्व युद्ध के शुरू होने पर सुभाष चंद्र बोस ने अंग्रेजों के खिलाफ मुहिम तेज कर दी। जिस कारण उनको घर में नजरबंद कर दिया गया। लेकिन वह किसी तरह से अंग्रेजों से बचते–बचाते जर्मनी पहुंच गए और वहां से अपनी मुहिम को जारी रखा। 21 अक्टूबर 1943 को सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज का गठन किया। इस दौरान उन्होंने आजाद हिंद बैंक की भी स्थापना की। उस दौरान दुनिया के 10 देशों ने नेताजी की सरकार, फौज और बैंको को अपना समर्थन दिया था।

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा

आजाद हिंद फौज के गठन के बाद नेताजी बर्मा पहुंचे। जहां पर उन्होंने तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा का नारा दिया था। उस समय देश आजादी की ओर था। नेताजी की फौज में सिंगापुर, ब्रिटिश मलय और न्य दक्षिण पूर्व एशिया के हिस्सों के युद्ध बंदी और बागानों आदि में काम करने वाले मजदूर शामिल थे।

मौत

एक विमान हादसे में 18 अगस्त 1945 को सुभाष चंद्र बोस की रहस्यमई तरीके से मौत हो गई। बताया जाता है कि उस विमान से नेताजी ने ताइवान से जापान के

लिए उड़ान भरी थी। हांलाकि नेताजी की मौत आज भी लोगों के लिए एक पहेली बनी हुई है।

मौत के बाद भी तमाम किस्से–कहानियों में नेताजी को जीवित बताया गया। कुछ लोगों का मत है कि विमान हादसे में सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु नहीं हुई थी। बल्कि कहा जाता है कि फैजाबाद में नेताजी भेष बदलकर नए नाम गुमनामी बाबा के रूप में रहते थे। बताया जाता है कि गुमनामी बाबा फर्राटेदार अंग्रेजी, बांग्ला और जर्मन बोलते थे। वहीं गुमनामी बाबा की मौत के बाद उनके पास से शराब, अखबार, पत्रिकाएं, महंगी सिगरेट, आजाद हिंद फौज की यूनिफॉर्म, नेताजी की निजी तस्वीरें, रोलेक्स की घड़ी, शाहनवाज और खोसला आयोग की रिपोर्ट आदि मिली थी। जिससे अंदाजा लगाया जाता है कि गुमनामी बाबा ही नेताजी थे। लेकिन यह बात आज तक साबित नहीं हो सकी।

सौ लक्ष्मीबाई इंग्लिश मीडियम स्कूल, मुलुंड में गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

मुलुंड। भारत का 76वां गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को सौ लक्ष्मीबाई इंग्लिश मीडियम स्कूल, मुलुंड पूर्व में गर्व और देशभक्ति के माहौल में मनाया गया। इस अवसर पर नवघर पुलिस स्टेशन के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक सुहास मदाने ने ध्वजारोहण किया. इस अवसर पर स्कूल के निदेशक प्रसाद कुलकर्णी, ट्रस्टी अभिषेक कुलकर्णी, प्रिंसिपल प्रज्ञा राजोपाध्याय, जूनियर कॉलेज और प्राथमिक विभाग की प्रमुख पूजा कुलकर्णी, शिक्षण कर्मचारी और अभिभावक उपस्थित थे। सभी ने एक साथ राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी और देशभक्ति से ओत–प्रोत राष्ट्रगान गाया।

देशभक्ति के जोश के बीच स्कूल परिसर में विद्यार्थियों ने भाषण दिए और देशभक्ति के गीत गाए। सेकेंडरी सेक्शन के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत डम्बल शो बहुत आकर्षक रहा। स्कूल के स्काउट और गाइड छात्रों द्वारा गाए गए स्काउट गीत देशभक्ति और देश के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक थे और उज्जवल भविष्य की आशा व्यक्त करते थे। कार्यक्रम का समापन एक महत्वपूर्ण संदेश के साथ हुआ, ष्हमारा उद्देश्य सभी व्यक्तियों के संयुक्त प्रयासों से एक महान राष्ट्र का निर्माण करना है।

गणतंत्र दिवस

।। वंदेमातरम् ।।

किसी भी राष्ट्र का उत्थान उसके नागरिकों द्वारा राष्ट्र के प्रति निष्ठावान एवं कर्तव्यपरायणता की भावना में ही निहित है। राष्ट्र की उन्नति ही हमारी स्वयं की उन्नति भी है। हमारे गणतंत्र दिवस की सफलता इसी में है कि हम सबके भीतर राष्ट्र प्रेम का भाव जन्म ले सके क्योंकि राष्ट्र प्रेम की भावना ही राष्ट्र उत्थान के साथ–साथ स्व उत्थान की भावना भी है। हम सभी के लिए राष्ट्र हित प्रथम होना चाहिए। राष्ट्र ने हमको क्या दिया से अधिक राष्ट्र को हमने क्या दिया..? इस का चिंतन सदैव बना रहना चाहिए। राष्ट्र के प्रति अधिकारों के साथ–साथ अपने कर्तव्यों का बोध भी हम सभी को अवश्य होना चाहिए।

आज के इस पावन दिवस में माँ भारती की सेवा में सतत संलग्न वीर सैनिकों को प्रणाम करते हुए, माँ भारती की रक्षा में अपने प्राणों का बलिदान देने वाले उन वीर सपूतों को बार – बार नमन जिन्होंने इस माँ भारती के वैभव को सदा सर्वदा ऊँचा और अमर बनाए रखा। आओ राष्ट्र हित में अपने – अपने निजी स्वार्थों की आहुतियां देते हुए इस गणतंत्र को सफल बनायें।

समस्त राष्ट्र वासियों को 76वें गणतंत्र दिवस की अनंत शुभकामनाएं व मंगल बधाई।

।। जय हिंद।।

मौनी अमावस्या....

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मौनी अमावस्या के दिन पितर पृथ्वी पर.आते हैं। इस दिन वे अपने वंशजों से तर्पण और दान की अपेक्षा करते हैं,जिससे उनकी आत्मा को शांति मिलती है। शाम को जब पितर अपने लोक लौटते हैं, तो उनके मार्ग को रोशन करने के लिए दीपक जलाया जाता है। ऐसा करने से पितर संतुष्ट होकर आशीर्वाद प्रदान करते हैं। मौनी अमावस्या पर करें तिल का दान. मौनी अमावस्या के दिन भगवान विष्णु की विधिपूर्वक पूजा करें और इसके बाद श्रद्धापूर्वक काले तिल का दान करने से मृत्यु के बाद बैकुंठ में स्थान मिलता है और जीवन में सुख–शांति आती है।

– संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार –सामाजिक विज्ञान, विज्ञान एवं खेलकूद (गोरखपुर)

पापा की डायरी में बीजेपी नेता का नाम...', जीशान के बयान के बाद बाबा सिद्दीकी हत्या मामले में आया नया मोड़

अजित गुट के एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी हत्या मामला दिन–प्रतिदिन और उलझता जा रहा है। जहां एक तरफ ये पूरी घटना बिश्नोई एंगल के तौर पर सामने आ रही है। वहीं दूसरी ओर बाबा सिद्दीकी के बेटे जीशान सिद्दीकी ने एक बड़ा बयान देकर मामले में और गर्माहट ला दी है। दिवंगत एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी के बेटे जीशान सिद्दीकी ने अपने बयान में बांद्रा में झुग्गी पुनर्वास (एसआरए) परियोजनाओं पर सवाल उठाए हैं। जीशान ने अपने पिता बाबा सिद्दीकी की हत्या के साथ उनके संदिग्ध संबंध की जांच की मांग की है। जीशान का बयान सिद्दीकी हत्याकांड में इस महीने की शुरुआत में पुलिस द्वारा दायर आरोपपत्र का हिस्सा है। उन्होंने अपने बयान में कहा है कि उनके पिता की मौत की जांच पुनर्विकास परियोजना के नजरिए और अन्य सभी कोणों से की जानी चाहिए।

उन्होंने यह भी बताया कि उनके पिता को विधान परिषद के सदस्य के रूप में मनोनीत किया जाना था और शपथ समारोह भी बाबा सिद्दीकी की हत्या के दो दिन बाद 15 अक्टूबर को होना था। जीशान ने पुलिस को दिए अपने बयान में ज्यादातर स्लम रिहैबिलिटेशन अथॉरिटी (एसआरए) परियोजना के बारे में बात की है। हालांकि, उनका दावा है कि पुलिस जांच में इसे छोड़ दिया गया, जिसके कारण जीशान सिद्दीकी ने इस महीने की शुरुआत में अपना असंतोष भी व्यक्त किया था। जीशान ने इस महीने की शुरुआत में एएनआई से कहा था, मुझे यह भी पता चला है कि चार्जशीट दाखिल हो गई है। हमें चार्जशीट की कॉपी नहीं मिली है, लेकिन हम कोर्ट के जरिए आवेदन करेंगे, लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स से पता चल रहा है कि अनमोल बिश्नोई और लॉरेंस बिश्नोई का नाम सामने आ रहा है और इसमें बिल्डर का कोई एंगल नहीं है और मैं इससे सहमत नहीं हूं। मैं जानना चाहता हूं कि क्या अनमोल बिश्नोई ने कबूल किया है कि उसने बाबा सिद्दिकी की हत्या की है।

क्या अनमोल बिश्नोई या किसी और से पूछताछ की गई है?... अगर अमेरिका के साथ आपकी प्रत्यर्पण संधि है तो अनमोल बिश्नोई को भारत वापस लाओ...मुख्य साजिशकर्ता अभी तक पकड़े नहीं गए हैं। अगर बिल्डर लॉबी को चार्जशीट से बाहर रखा जा रहा है, तो मेरा सवाल यह है कि क्या अनमोल बिश्नोई या लॉरेंस बिश्नोई ने कहा है कि किसी बिल्डर ने उन्हें मेरे पिता को मारने के लिए नहीं कहा? पुलिस को दिए अपने बयान में जीशान ने कहा कि उसके पिता झुग्गी पुनर्विकास परियोजना के सिलसिले में कई लोगों के संपर्क में थे। जीशान ने पुलिस को दिए अपने बयान में कहा है कि उसके पिता को डायरी लिखने की आदत थी और जिस दिन उसके पिता की हत्या हुई, उस दिन उनकी डायरी में एक खास नाम लिखा था। जीशान ने पुलिस को दिए अपने बयान में कहा, कई डेवलपर हैं जो मेरे पिता के नियमित संपर्क में थे। मेरे पिता को अपने दैनिक कार्यों के बारे में डायरी लिखने की आदत थी। मुझे पता चला कि शाम 5.30 से 6 बजे (हत्या के दिन) के आसपास मोहित कंभोज (भाजपा कार्यकर्ता) ने मेरे पिता से उनके व्हाट्सएप पर संपर्क किया था। मोहित मुंद्रा बिल्डर्स द्वारा बांद्रा में एक परियोजना के संबंध में मेरे पिता से मिलना चाहता था। जीशान सिद्दीकी ने पुलिस को बताया कि वह और उसके पिता मुंबई के बांद्रा इलाके में झुग्गी–झोपड़ियों में रहने वालों के अधिकारों के लिए लगातार लड़ रहे थे, उन्होंने कहा कि पुनर्विकास परियोजना के प्रति उनकी आपत्ति के कारण उनके खिलाफ झूठा मामला दर्ज किया गया था। बाबा सिद्दीकी की हत्या के सिलसिले में पुलिस ने 24 अक्टूबर और 25 अक्टूबर को जीशान के बयान दर्ज किए थे। अपने पिता की गोली मारकर हत्या किए जाने वाले दिन के बारे में बात करते हुए जीशान ने पुलिस को दिए अपने बयान में कहा, मैं शाम करीब 6:00 बजे उनके कार्यालय पहुंचा और मेरे

पिता करीब 7:00 बजे कार्यालय पहुंचे और रात करीब 9:00 बजे जीशान सिद्दीकी को भूख लगी और उसने अपने पिता से कहा कि वह 10 से 15 मिनट बाद आएगा।

जीशान सिद्दीकी जब बांद्रा ईस्ट इलाके में कलेक्टर ऑफिस के पास एक रेस्टोरेंट में थे, तो पार्टी के एक कार्यकर्ता ने उन्हें बताया कि उनके पिता को गोली लगी है और उन्हें लीलावती अस्पताल ले जाया गया है। जीशान सिद्दीकी भी वहां पहुंचे और अपनी मां और बहन को इस बारे में बताया। जैसे ही जीशान और उनका परिवार अस्पताल पहुंचा, उन्हें बताया गया कि बाबा सिद्दीकी को आईसीयू में ले जाया गया है। इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। जीशान ने पिछले साल हुए विधानसभा चुनाव में एनसीपी (अजीत पवार गुट) के उम्मीदवार के रूप में बांद्रा पूर्व विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा था, जिसमें वह हार गए थे। गौरतलब है कि पुलिस ने इस मामले में 4,500 पन्नों की चार्जशीट दायर की है, जिसमें 26 आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। इस चार्जशीट में शुभम लोनकर, यासीन अख्तर और अनमोल बिश्नोई को वांछित आरोपी बताया गया है। सभी आरोपियों पर महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम (मकोका) के तहत मामला दर्ज किया गया है और वे अभी न्यायिक हिरासत में हैं।

एक तकिया कलाम चल पड़ा है कि मुसलमान मरने से नही डरता है

हमने सद्दाम को भी बंकर मे छुपे देखा है, कर्नल गद्दाफ़ी को पुलिया में छुपे देखा है, ईदी अमीन को महिला के वेश में भागकर सऊदी अरब में शरण लेते देखा है रोहिंग्याओं को वर्मा से भागते हुए देख रहे हैं,सीरिया में ISIS लड़ाकों को बुर्के मे भागते देखा है और 1971 में इमरान के चाचा जरनल नियाजी को भी जान बचाने के लिए सरेंडर करते हुए देखा है 90 हजार एक साथ घोडी बने थे हिंद की काफिर सेना के सामने और तो और, सिर्फ एक अल्लाह से डरने की नसीहत देने वाला जाकिर नाइक डर के मारे मलेशिया छिपा बैठा है। अपने बाप की मय्यत तक में आने की हिम्मत न हुई। ये आलम है कौम का और ससुरे कहते है हम सिर्फ अल्लाह से डरते हैं।

इसरो का 100वां लान्च सफलः भारत कितना ताकतवर हुआ, दुनिया की किस तकनीक पर निर्भरता खत्म करने की तरफ हम

–संजय वर्मा

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का 100वां लॉन्च मिशन सफल हो गया है। एनवीएस–02 उपग्रह को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित करने के बाद इसरो की इस उपलब्धि को बड़ा मुकाम करार दिया जा रहा है। देशभर की बड़ी हस्तियों ने इस मिशन की सफलता को लेकर इसरो को बधाई दी हैं। ऐसे में यह जानना अहम है कि इसरो का 100वां मिशन किस बारे में था? आखिर इसकी सफलता के क्या मायने हैं? किस क्षेत्र में भारत अब जल्द ही दूसरी महाशक्तियों पर निर्भरता को पूरी तरह खत्म कर सकता है?

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

सम्पादक

पूजा प्रसाद पाण्डेय

मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।

सोच अच्छी ख़बर सच्ची